चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तो का विश्लेषण

एवं व्याख्या

अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

प्रथम अध्याय इस अध्ययन की आवश्यकता, महत्व, उद्देश्य, परिकल्पना व समस्या सीमाकंन की विस्तृत व्याख्या करता है। द्वितीय अध्याय में हम देखते हैं कि किन साहित्यों को आधार मानकर यह अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय हमें शोध प्रविधि की जानकारी देता है जिसमें हम शोध अभिकल्प, चर, न्यादर्श, उपकरण व प्रयुक्त सांख्यिकी की चर्चा करते हैं। प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित उद्देश्य के अध्ययन हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। प्रदत्तों के विश्लेंषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धि व रूचि की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्ति द्वारा किया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध के इस अध्याय में शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए जिन 5 परिकल्पनाओं को बताया उनको उपयुक्त सांख्यिकी विधि का चयन कर क्रमानुसार परीक्षण कर उनकी व्याख्या की गई है।

संग्रहित समकों का विश्लेशण, सारणीयन एवं प्रस्तुतीकरण आदि, अनुसंधान, कार्य का महत्वपूर्ण अंग है। जिसे प्रस्तुत किये बिना शोधकार्य को विधिवत् प्रस्तुत करना संभव नहीं है।

माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा आठ के विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि ज्ञात करने के लिए छत्तीसगढ़ सरगुजा जिले के उदयपुर ब्लाक के माध्यमिक विद्यालयों :-

1. शासकीय बालक पूर्व माध्यमिक शाला उदयपुर ।
2. शासकीय बालिका पूर्व माध्यमिक शाला उदयपुर ।
3. शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला खम्हरिया।
4. शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला जजगा (उदयपुर)

व शहरी अंबिकापुर शहर के

1. शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अंबिकापुर।
2. शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मणिपुर।
3. शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अंबिकापुर।
4. शासकीय बालक पूर्व माध्यमिक शाला अंबिकापुर।

के कुल 200 विद्यार्थी 100 ग्रामीण व 100 शहरी जिनमें 50% बालक व 50% बालिकाओं को लिया गया। इनसे सामाजिक अध्ययन अभिरूचि मापनी भरवायी गई।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना कमांक–1

सामाजिक अध्ययन में छात्र–छात्राओं की रूचि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक 4.2.1

छात्र व छात्राओं की सामाजिक अध्ययन में रूचि दर्शाने वाली 'टी' मूल्य की सार्थकता

चर	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	'टी' का मान
रूचि	छात्र	100	91.10	7.56	1.98	1.37
	छात्राएँ	100	88.12	5.39		

सार्थकता स्तर

0.05 स्तर पर = 1.97 df .198

तालिका क्रमांक 4.2.1 से ज्ञात होता है कि छात्र व छात्राओं की रूचि का मध्यमान प्राप्तांक क्रमशः 91.10 एवं 88.12 इसमें अधिक अंतर नहीं पाया गया। प्राप्त 'टी' परीक्षण का मान 1.37 है जो कि विश्वास स्तर 0.05 स्तर के मूल्य से कम है। अतः यह 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः यह बताया जा सकता है कि छात्र व छात्राओं की सामाजिक अध्ययन में रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना कमांक–2

छात्र व छात्राओं की सामाजिक अध्ययन की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत परिकल्पना की जाँच के लिए 'टी' का मान निकाला गया।

तालिका क्रमांक 4.2.2

छात्र व छात्राओं की सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाने वाली 'टी' मूल्य की सार्थकता

चर	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	't' का मान
शैक्षिक उपलब्धि	छात्र	100	98.56	24.53	198	5.343
	छात्राएँ	100	103.91	26.04		

सार्थकता स्तर

0.01 स्तर पर = 2.60 df.198

तालिका क्रमांक 4.2.2 से ज्ञात होता है कि छात्र व छात्राओं की सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान प्राप्तांक क्रमशः 98.56 एवं 103.91 इसमें समानता पायी गई। प्राप्त 'टी' परीक्षण का मान 5.343 है जो 0.01 के मान से ज्यादा है। जो कि विश्वास स्तर 0.01 स्तर के मूल्य से अधिक है। अतः यह 0.01 स्तर पर सार्थक है।

इसका अर्थ यह है कि छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष निकलता है कि छात्र व छात्राओं की सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना क्रमांक–3

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में सामाजिक अध्ययन में उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक 4.2.3

ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं की सामाजिक अध्ययन उपलब्धि संबंधी तालिका

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	'टी' का मान
शैक्षिक उपलब्धि	ग्रामीण	100	101.95	24.09	198	.547
	शहरी	100	100.52	26.70		

सार्थकता स्तर

0.05 स्तर पर = 1.97 df.198

तालिका क्रमांक 4.1.3 से ज्ञात होता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान प्राप्तांक क्रमशः 100.52 व 101.95 है जिसका 'टी' मूल्य 0.547 है जो कि स्तर 0.05 के मान से कम अतः यह सार्थक नहीं है।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है निष्कर्षतः यह बताया जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी छात्रों की सामाजिक अध्ययन में उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना कमांक–4

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक 4.2.4

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन रूचि संबंधी तालिका

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	'टी' का मान
रूचि	ग्रामीण	100	90.00	5.61	198	.3768
	शहरी	100	89.22	7.68		

सार्थकता स्तर

0.05 स्तर पर = 1.97 df.198

तालिका क्रमांक 4.1.4 से ज्ञात होता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान प्राप्तांक क्रमशः 90.00 व 89.22 है जिसका 'टी' प्राप्तांक .3768 है जो कि विश्वास स्तर पर 0.05 के मान से कम है अतः यह सार्थक नहीं है।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है निष्कर्षतः यह बताया जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना कमांक–5

सामाजिक अध्ययन के अध्ययन में रूचि व विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

तालिका कमांक–4.2.5

सामाजिक अध्ययन में उपलब्धि व रूचि संबंध दर्शाने का विवरण

चर	सहसंबंध गुणांक
सामजिक अध्ययन में रूचि	0.06
सामाजिक अध्ययन में उपलब्धि	

सामाजिक अध्ययन में छात्रों की रूचि व उपलब्धि में के आंकड़ो के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि छात्रों कि सामाजिक अध्ययन में रूचि व शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध गुणांक 0.06 है। अतः यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक अध्ययन में रूचि के बीच नगण्यात्मक सहसंबंध है। अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि में सामाजिक अध्ययन में रूचि बढ़ने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है या उनमें कोई विशेष संबंध नहीं हैं। अभिभावकों व शिक्षकों का दबाव, उच्च अंक प्राप्त करने की अभिलाषा भी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं।